दीपावली

भाग 1

दिवाली के दिये

Duration : 03.53

Transcribed words : 609

	00.01	- संगीत -
सुनील कुमार प्रजापत - कुम्हार	00.10	सुनील कुमार प्रजापत... मैं करता हूं मिट्टी का काम...
दिनेश कुमार - कुम्हार	00.16	नाम दिनेश कुमार...
फूलचंद प्रजापत - कुम्हार	00.17	मेरा नाम फूल चंद प्रजापत है। ये हमारा नेचुरल काम है, मिटटी के बरतन बनाने का काम...
मुलचंद - कुम्हार	00.22	मेरा नाम मूलचंद है। मैं मिटटी का काम करता हूं टेराकोटा का... हमारा खानदानी काम है ये... हमने शुरू से ये ही काम किया है...
	00.32	- संगीत -
सुनील कुमार प्रजापत - कुम्हार	01.00	हमारी मिटटी आती है हरियाणा से... उसको डलवाते हैं, उसको फोडते हैं पहले तो... फोडने के बाद उसको हाथ से मींढते हैं... हाथ के मींढने के बाद फिर उसको बांस से अपने खूंडते हैं, सीधा बूंदी बना के अपने चाक पर रखते हैं....
फूलचंद प्रजापत, कुम्हार	01.15	चाक पे रखने के बाद उसको आकार देते हैं, जिस भी आकार, बडा दिया बनाना है, छोटा दिया बनाना है,

		उसी तरह का आकार दे देते हैं...
	01.22	- संगीत -
सुनील कुमार प्रजापत – कुम्हार	01.35	शेप बना दिया हमने, उसके बाद उसको सुखाते हैं... सुखाने के बाद उसको धूप में रखके जब भट्टे में पकाते हैं उसको...
मुलचंद – कुम्हार	01.40	भट्टी जी ऐसे होता है, जैसे हमने भट्टी में हमने माल भरा है, नीचे भी इसमें पार्टीशियन होता है इसमें संख्या होती है अंदर... तो इसमें अंदर गैस बनती है आग की... तो गैस बनने के बाद ऊपर गैस जाती है, आग... तो वो भट्टी में पकती है...
सुनील कुमार प्रजापत – कुम्हार	01.57	चार घंटे या पांच घंटे पकने में लगते हैं... उसके बाद फिर सुबह उतारते हैं...
मुलचंद – कुम्हार	02.03	मिटटी के बरतन पकाने से पक्का हो जाता है और होता क्या है...
सुनील कुमार प्रजापत – कुम्हार	02.07	पकने के बाद उतारते हैं, उतारने के बाद फिर उसको, क्या नाम, कलर है, लाल है या पीला है, जो भी कुछ कलर है, कर कुरा के अपने गोल्डन जो है, गोल्डन मार के उसको जब उनको सडक पर रखके दुकनदार अपने आते हैं उसको हम बेक देते हैं...
फूलचंद प्रजापत – कुम्हार	02.24	एक दिन में तीन हजार दीये बनाते हैं तो एक, दो तीन महीने के बच्चे हमारे सब मिलके लग के एक लाख दीये बना लेते हैं हम...
मुलचंद – कुम्हार	02.32	दिवाली की खास तैयारी है, दीपक बनाते हैं हम, मूर्तियां वगैरह बनाते हैं... फैन्सी दीवाली बनाते हैं बडी वाली... ये हठडिया मंदिर वगैरह ये सब दीवाली पर बनाते हैं... चौकडे वगैरह बनाते हैं... ये बडे दीपक

		है, ये छोटी हांडी है, ये बनाते हैं हम...
सुनील कुमार प्रजापत - कुम्हार	02.48	ज्यादातर जो मेन काम है ना हमारा वो दीवाली पर ही होता है... जितना हमने पैसा कमा लिया, सिर्फ दीवाली पर ही कमाते हैं हम...
दिनेश कुमार - कुम्हार	02.56	दीपावली हमारे लिये काफी महत्वपूर्ण है... क्योंकि अदर सीजन जो लोग काम करते हैं वो अपना पेट भरने के लिये करते हैं... दीवाली की आस लगा के बैठते हैं, तीन महीने पहले से हम, कि दीवाली कब आयेगी, कब हमारी सेविंग होने लगेगी, कब हमारा माल बिकेगा, कब हमारा जायेगा माल... जैसे ही दीवाली आती है, हम कुम्हारों के अंदर कुछ खुशी की ऐसे लहर दौडती है जिस तरीके से हम पैसे जोडें, आगे अपना जीवन जो भी कुछ है वो आगे बढायें इस चीज में... एक कुम्हार कमाता है तो दस परिवारों का पेट भरता है... हमारे प्रति जो मिटटी डालता है, उसका परिवार... हमसे बुरादा डालता है, उसका परिवार... जो हमसे खरीदता है, जो बेचता है - उसका परिवार... यानि कि इसमें एक कारीगर से दस परिवारों का पेट भरता है, इसलिये दीवाली महत्वपूर्ण है हमारे लिये...
ग्राहक	03.38	कितने में दिया है ये दीया ये...
	03.39	- संगीत -

- o - o - o - o - o -